12 H

12 H

30

ਸ਼ਾਰਦਾ ਲਿਪਿ ਪਾਠ-ਪੁਸਤਕ

शारदा लिपि पाठ्य-पुस्तक

Shārdā Script Reader

Dr. T. N. Ganjoo

शारदा लिपि का परिचय
(शारदा लिपि का परिचय)

शारदा लिपि के स्वर एवं ब्राह्मन
(शारदा लिपि के स्वर)

𑆃 (अ) 𑆄 (आ) 𑆅 (इ) 𑆆 (ई) 𑆇 (उ) 𑆈 (ऊ) 𑆉 (ऋ) 𑆊 (ॠ)

𑆋 (ऌ) 𑆌 (ॡ) 𑆍 (ए) 𑆎 (ऐ) 𑆏 (ओ) 𑆐 (औ) 𑆁 (अं) 𑆂 (अः)

𑆑 (क) 𑆒 (ख) 𑆓 (ग) 𑆔 (घ) 𑆕 (ङ)

𑆖 (च) 𑆗 (छ) 𑆘 (ज) 𑆙 (झ) 𑆚 (ञ)

ट (ट) ठ (ठ) ड (ड) ढ (ढ) ण (ण)

त (त) थ (थ) द (द) ध (ध) न (न)

प (प) फ (फ) ब (ब) भ (भ) म (म)

य (य) र (र) ल (ल) व (व)

श (श) ष (ष) स (स) ह (ह)

संयुक्त व्यञ्जन

(संयुक्त व्यञ्जन)

क्ष - क्ष त्र ज्ञ - ज्ञ

भाषाओं का भाषिक एवं प्रयोग (मात्राओं का स्वरूप एवं प्रयोग) :

अ > वन (वन), उरल (तरल) भरल (सरल) गरल (गरल)

पवन (पवन) कमल (कमल) वदन (वदन) जनक (जनक)

आ > ा, आरा, (आरा) कारा, (कारा) धारा (धारा), मारक (मारक)

चालक, (चालक) पालक, (पालक) कारक, (कारक)

इ > ि, किन्नर (किन्नर) किरात (किरात) किसलय (किसलय)

दिन (दिन) गिरि, (गिरि) हरि (हरि) बिना (बिना) भिन्न (भिन्न)

ई > ी, कीटक, (कीटक) कीर (कीर) कीलाल (कीलाल)

जीवनभ, (जीवनम्) क्षीर, (क्षीर) नीर (नीर) धीर (धीर)

उ > ु, उकार, (उकार) कुमार (कुमार) सुकाल (सुकाल)

पुराकाल (पुराकाल) दुराचार (दुराचार) पुर (खुर)

ऊ > ㄱ, 𑀕𑀽𑀡𑁆𑀡𑀫 (गूढम्) 𑀘𑀽𑀟𑀸𑀫𑀡𑀺 (चूडामणि) 𑀚𑀽𑀢𑀺 (जूति)

𑀢𑀽𑀡𑀻𑀭 (तूणीर) 𑀤𑀽𑀢 (दूत) 𑀤𑀽𑀭 (दूर) 𑀥𑀽𑀫 (धूम)

ऋ > ऽ, 𑀓𑀽𑀲𑁆𑀲, (कृष्ण). 𑀓𑀽𑀧𑀡 (कृपण) 𑀖𑀽𑀢 (घृत) –

𑀦𑀽𑀢 (नृत) 𑀧𑀽𑀓𑀽𑀢𑀺 (प्रकृति) 𑀪𑀽𑀕 (भृगु) 𑀫𑀽𑀕 (मृग)

ऍ > ω, 𑀓𑁅 (कॅ) किवडि (ढंकना), (किरति, केंकना)

उω (तॅ) उवडि (पार होना) (तरति (पार होना)

अब "ऽ" (ॡ) एवं "ऽ" (ॠ) का प्रयोग भाषा में उपेक्षित हो चुका है।
(अब ॡ (ऽ) एवं ॠ (ऽ) का प्रयोग भाषा में उपेक्षित हो चुका है)

ए > े, केका (केका) चेतना (चेतना) केशव (केशव) मेलक (मेलक) धेनु (धेनु) केयूर (केयूर) वेतसी (वेतसी)

ऐ > ै, कैलास (कैलास) वैतान (वैतान) वैकुण्ठ (वैकुण्ठ) शैल (शैल) पैतृक (पैतृक) सैकत (सैकत) हैमी (हैमी)

ओ > ो, कोमल (कोमल), तोरण (तोरण) नोधा (नोधा) दोहन (दोहन) होम (होम) बोध (बोध) पोतः (पोतः)

औ > ौ, कौरव (कौरव) कौल (कौल) मौन (मौन) नौका (नौका) पौत्र सौचक मौलि (मौलि) यौवन (यौवन)

अं > ं , अंबर (अंबर) अलंकार (अलंकार) अंबरीष (अंबरीष)

कंपन (कंपन) अलं (अलं) कंबल (कंबल)

अः > ः , कृष्णः (कृष्णः) रामः (रामः) काकः (काकः)

गजः (गजः) गडुः (गडुः) चेटकः (चेटकः)

संयुक्त व्यञ्जन और उनसे संलग्न मात्रा रूप :
(संयुक्त व्यञ्जन और इनसे संलग्न मात्रा रूप)

(क) क्क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
(का) (क्क, क्का, क्कि, क्की, क्कु, क्कू, क्के, क्कै, क्को, क्कौ क्कं क्कः)

(प) ऽ ऽा ऽि ऽी ऽु ऽू ऽे ऽै ऽो ऽौ ऽं ऽः

(ख) (त्र त्रा त्रि त्री त्रु त्रू त्रे त्रै त्रो त्रौ त्रं त्रः)

(ग) ह्ल ह्ला ह्लि ह्ली ह्लु ह्लू ह्ले ह्लै ह्लो ह्लौ ह्लं ह्लः

(ग) (ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः)

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

मारवा लिपि में कुछेक द्वित्व अक्षरों का भाभाव —
(शारदा लिपि में कुछेक द्वित्व अक्षरों का समाव —

परिचय :
(परिचय :

क्क (क्क), क्त (क्त), क्य (क्य), क्र (क्र), क्ल (क्ल), क्व (क्व) क्ष (क्ष)
ग्द (ग्द), ग्ध (ग्ध), ग्ब (ग्ब), ग्म (ग्म) ग्व (ग्व) घ्र (घ्र) च्च (च्च)
च्छ (च्छ) च्य (च्य) च्र (च्र) ङ्क (ङ्क) ञ्च (ञ्च), ञ्ज (ञ्ज) ञ्छ (ञ्छ) ञ्झ (ञ्झ)
ञ्ञ (ञ्ञ) ट्ट (ट्ट) ट्ठ (ट्ठ), ट्य (ट्य), ड्ड (ड्ड) ड्ढ (ड्ढ) ड्य (ड्य) ण्ट (ण्ट)
ण्ड (ण्ड) ण्ढ (ण्ढ) ण्ठ (ण्ठ) त्त (त्त), त्थ (त्थ)

ट्ट (त्त्व), ठ्ठ (त्थ), ड्ड (त्न) ट्ठ (त्य) ड्ढ (त्स), ट्ठ्र (त्थ्र) ट्ट्र (त्र)
ट्ठ (द्य), ड्ढ्म (द्म) ट्ठ (द्य्य) ट्ठ्र (द्य्र) ट्ठ्व (द्ध्व) ड्ड (न्न) ड्ढ (न्द)
ड्ठ (न्थ), ड्ड्र (न्द्र), ड्ढ (न्ध) ट्ठ (न्य), थ्ठ (प्य), थ्ठ्र (प्र), त्थ्व-
(ह्प), ध्म (प्स), ङ्ग (ब्ज), ड्ढ (ब्द), ब्ठ (ब्र), ब्ठ (ब्य), ब्ठ्र (म्य),
ड्ढ (भ्र), भ्र (म्न), भ्म (म्व), भ्म्ठ्र (म्व्र), भ्ठ (म्म), भ्म (म्म),
म्ठ्र (म्र) म्ल (म्ल) य्ठ (य्य) भ्ठ (स्थ) भ्म, भ्ठ्क (स्क) ल्ठ (ल्य)
ल्ल (ल्ल), व्ठ (व्य) श्र (श्च), श्र (श्न) श्ठ (श्य) भ्ठ (स्य) स्व (स्व)
भ्ठ (स्ह), स्र (श्र) स्व (श्व), श्र्श (श्श) ष्ठ (ष्ठ) ष्ठ्ण (ष्ण)
ष्म (ष्म) स्त (स्त) ह्ठ (ह्न) ह्ल (ह्ल) ह्म (ह्म) ह्ठ (ह्य)
ह्ठ (ह्र) ह्ल (ह्ल) "परमाऽत्मानं अव्ययम्" ("परमात्मानं अव्ययम्")

(क) "शारदा लिपि में अग्र-हलन्त /र्/ ध्वनि के होने पर पश्चे में-
शारदा लिपि में अग्र-हलन्त /र्/ ध्वनि के होने पर पश्चे में-

में प्रवृत्त/ल्/ध्वनि की स्थिति के आने पर एक ओर ही भिन्न ध्वनि-चिह्न का रूप उभर-
(मूर्धन्य/ण/ध्वनि की स्थिति के आने पर एक ओर ही भिन्न ध्वनि-चिह्न का रूप उभर-

कर आता है, किन्तु ध्वनि उच्चारण यथास्थित होकर बना रहता है।"
कर आता है, किन्तु ध्वनि उच्चारण यथास्थित होकर बना रहता है।)

विश्लेषित-उदाहरण :- कवल्य > कल्ल, वल्य > वल्ल
(विश्लेषित-उदाहरण) :- कर्ष्य >> कर्ष्ठ, वर्ष्य > वर्ष्ठ

सामान्य-बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया :—
(सामान्य-बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया)

धत्त (धर्त), शीत्त, (जीर्त) मीत्त, (शीर्त) धूत्त, (धूर्त) पूत्त, (पूर्त)
सूत्त, (चूर्त) कत्ती (कर्ती), कत्राट्क: (कर्णाटक:) कत्रिकार (कर्णिकार)
ताति (तार्ति) कत्क: (कर्तक:) ताती (तार्ती) कत्तिल (कर्तिल)
कत्राकति (कर्णाकर्ति) तात्तभभा (तार्तसम) निर्णय: (निर्णय:)
सुपत्त (सुदर्त) धत्तल (दर्तल) तूत्तभय (तूर्णमय) पूर्त्तिभा (पूर्णिमा)
निर्णय: (निर्णय:) निर्णायक (निर्णायक), धर्त्तभ (धर्तस) अर्त्तव (अर्णव)
वर्त्तभा, (वर्णनम्) कर्त्तधात्ती (कर्तीदात्ती) कर्त्तिका (कर्तिका)
तर्त्त (तर्क) तीर्त्त (तीर्क) वर्त्त (वर्ण) वर्त्तक (वर्णक) वर्त्तूलि (वर्तूलि)

(ख) शारदा लिपि में अग्र हलन्त /र/ ध्वनि के होने पर-
(शारदा लिपि में अग्र हलन्त /र्/ ध्वनि के होने पर

पश्च में अन्तस्थ /य/ ध्वनि की स्थिति के अगले पर एक और ही ध्वनि
पश्चे में अन्तस्थ /य/ ध्वनि की स्थिति के अगले पर एक और ही ध्वनि

चिह्न का रूप उभर आता है, किन्तु ध्वनि उच्चारण यथास्थित
चिह्न का रूप उभर आता है, किन्तु ध्वनि उच्चारण यथास्थित

होकर रहता है।
होकर रहता है)

विश्लेषित उदाहरण :- कार्य, (कर्द) भार्य (भर्द)
(विश्लेषित उदाहरण :-) कार्य, (कर्य) भर्य (भर्य)

सामान्य-बोध के लिये अभ्यास की प्रक्रिया :-
(सामान्य-बोध के लिये अभ्यास की प्रक्रिया)

ষাদ (चार्य) অুদ (आर्य) বদ (वर्य) ধদ (पर्य) ষীদ (भीर्य)
ষ্াদা (भार्या) ঔদ (धैर्य) ধদ্ধাসউ (पर्युपास्ते) নিদ্যৈগ: (नि-
योग:) ধদায়: (पर्याय) ধদাকুল (पर्याकुल) ধদঙ্ক (पर्यङ्क)
ধদাএক (पर्यटन) ধদাপু (पर्याप्त) ঔদ্যম (धैर्यम्)
মদাস (मर्यादा) মৌদ (मौर्य) ণাদ (धार्य) ধদউ-
(धुर्यता) ধদবস্থিউ (पर्यवस्थित) ধদ (पर्य) মদক: -
(मर्यक:) ধদুপাসীন (पर्युपासीन) কাউবীদ (कार्तवीर्य)
যদ (चर्य) যৌদ (चौर्य) তূদ (तूर्य) নিদাম (निर्यास)
নিদাণ্ঠ (निर्याठा) নিদাউন (निर्यातन) নিদূঢ় (निर्यूढ)

(ग) शारदा लिपि में अग्र हलन्त /ग्/ ध्वनि के होने से

पक्ष में अन्तस्थ /व/ ध्वनि की स्थिति के आने पर एक और ही-

किन्तु ध्वनिचिह्न का रूप उभर आता है, किन्तु ध्वनि उच्चारण

यथास्थित होकर रहता है।

विश्लेषित उदाहरण :- अर्व (अच), गर्व (गच),
(विश्लेषित उदाहरण) : (सर्व, (सर्व), गर्व, (गर्व))

अभ्यास-बोध के लिये अभ्यास की प्रक्रिया :——

(सामान्य-बोध के लिये अभ्यास की प्रक्रिया)

गर्वाट: (गर्वाटः) गर्वित: (गर्वितः) चर्च (चर्चा) चर्चित (चर्चित)
दुर्च (दुर्व) पूर्च (पूर्व) दुर्चक्ति (दुर्वक्ति) पूर्चक (पूर्विक) निर्चर्ह-
(निर्वार्ह), निर्चार्य (निर्वार्य), निर्चेद (निर्वेद), पर्वत (पर्वत), पर्व-
(पर्व), निर्चासित (निर्वासित), निर्वचनम् (निर्वचनम्), निर्वर्हणम्-
(निर्वर्हणम्), पूर्वाह्णेन (पूर्वाह्णेन) पर्वन् (पर्वन्), दर्व-
(दर्व), दर्विक: (दर्विकः), दूर्वा (दूर्वा), शर्व (शर्व) शर्वरी-
(शर्वरी), सर्व (सर्व) सार्व (सार्व) दुर्व (दुर्व) वर्वरीक —
(वर्वरीक) चतुर्वर्ण (चतुर्वर्ण) चतुर्वेद: (चतुर्वेदः) चतुर्विद्या-
(चतुर्विद्या) चतुर्विंश: (चतुर्विंशः) दुर्जन (दुर्जन) दुर्विध-
(दुर्विध) पर्वतीय (पर्वतीय) गौर्वीर (गौर्वीर) वर्वण (वर्वणा)
गन्धर्व (गन्धर्व), कर्वट: (कर्वटः)

(घ) 'A' शारदा लिपि में अग्र-हलन्त /र्/ ध्वनि के होने

पर पक्ष /ख, ग, च, ज, ध, श/ ध्वनियों की उपस्थिति पर अग्रिम

हलन्त /र्/ ध्वनि के लिए वर्ण के ऊपर रिक्त-स्थान या खाली

स्थान रखा जाता है)

विश्लेषित उदाहरण 1. /ख/ ध्वनि ('ख' ध्वनि:) "अर्ख" —

(अर्ख), अर्क (अर्क) 2. /ग/ ध्वनि ('ग' ध्वनि) "अर्ग" —

(अर्ग), अर्ज (अर्ज) 3./स/ ध्वनि ('च' ध्वनि) "अर्गस" (अर्च)

'अर्च' (अर्च) 4./ग/ ध्वनि ('ज' ध्वनि) "अर्गल" (अर्ज) -

अर्ज (अर्ज) 5./ध/ ध्वनि ('ध' ध्वनि) "अर्घ" (अर्ध)

अर्घ (अर्घ) 6./श/ ध्वनि (श ध्वनि) अर्श (अर्श)

अर्श (अर्श)

"B"

भाषा सीखने के लिए अभ्यास की प्रक्रिया /ग/+/य/ (रख)
(सामान्य बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया)

भर्त्स (सर्ख), उर्त्स (तर्ख), अर्त्सल (अर्खल) विर्त्सउ (विर्खत)

तर्त्सउि (तर्खति) भर्त्सल, (मर्खल), वर्त्सट (वर्खट:)।

भाभाइ बोध के लिये अनुभव की प्रक्रिया :— /र्+ग/
सामान्य बोध के लिये अभ्यास की प्रक्रिया :— "र् + ग"

भन (स्वर्ग) भान (मार्ग) गनरि (गर्गरि), कन (कर्ग)
दन (दुर्ग) दनति (दुर्गति), दनव, (दुर्गन्ध) हन (भर्ग)
निनछी, (निर्गुण्डी) भनित (मर्गित) वन (वर्ग) भन (मर्ग)
वनेउभ (वर्गोत्तम) वनभ्रल, (वर्गमूल) भनवव (स्वर्गबन्ध)
निनूख (निर्ग्रन्थ) दनानवभी (दुर्गनवमी) हन (भर्ग)
हानवः, (भार्गवः) हानवी (भार्गवी) भानसिरः (मार्गशिरः)
भनिकः (मार्गिकः) भनिन्ना (मार्गिन्) भानसाला (मार्गशाला)

"D"

मध्यम वैण के लिए अनुभव की प्रक्रिया :- / ब+च /
सामान्य कोष के लिए अभ्यास की प्रक्रिया :- / र+च /

कच्चा (कचूरा), अच्चना (अर्चना) कच्चिका (कचूरिका)

कूच्चिका (कूर्चिका), चच्चा (चर्चा), चच्चक (चर्चक)

चच्चनम (चर्चनम्), चच्चरी, (चर्चरी) चच्चित (चर्चित)

जच्च (जर्च), तुच्च (तुर्च), धुच्च (धुर्च) पच्च (पर्च)

भच्च (भर्च), मच्चट (मर्चट), वच्च (वर्च), अच्च (अर्च),

मच्च (मर्च), मूच्चि (मूर्चि) मच्चर (मार्चर) अच्चि (अर्चि)

भाभाट चैप के लिए अहाभकी प्रक्रिया :— /ब(+रा/
सामान्य बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया :— / र् + ज/

भार्जार: (मार्जार:) भार्जनी (मार्जनी) अर्जन (अर्जन) भार्जा (मार्जा)

भर्जन (भर्जन) भार्जिता (मार्जिता) रार्जर (जर्जर), रार्जरीक, -

(जर्जरीक) निर्जाउ (निर्जात) गुर्जर (गुर्जर) निर्जय: (निर्जय:)

निर्जाउ (निर्जात) अर्जक (अर्जक) अर्जा (अर्जा) अर्जुन (अर्जुन)

आर्जव (आर्जव) आर्जुनि (आर्जुनि) ऊर्जा (ऊर्जा) ऊर्जिउ (ऊर्जित)

कर्जा (कर्ज़) तर्जनं (तर्जनं) तर्जिउ (तर्जित) तर्जनी (तर्जनी)

सामान्य बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया:- /र्+ध/

अर्ध (अर्ध) अर्धचः (अर्धचः), अर्धुक (अर्धुक) अर्धुक - (अर्धुक) अर्धचन्द्र (अर्धचन्द्र) रात्र्यर्धम् (रात्र्यर्धम्) ऊर्ध्व - (ऊर्ध्व) ऊर्ध्वलोक (ऊर्ध्वलोक) ऊर्ध्ववाद (ऊर्ध्ववाद) ऊर्ध्वकण्ठी (ऊर्ध्वकण्ठी) ऊर्ध्वजानु (ऊर्ध्वजानु) ऊर्ध्वबाहु (ऊर्ध्वबाहु) ऊर्ध्वपुण्ड्र (ऊर्ध्वपुण्ड्र), ऊर्ध्वगमन (ऊर्ध्वगमन)। पार्श्वलिपि > च्छ (छ)

सामान्य बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया:- /च्+म/ :——

सामान्य बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया:- /र्+श/ :——

दार्श (दार्श), दर्शन (दर्शन) दार्शनिक (दार्शनिक)
दैर्शक (दैर्शक) पार्शुक (पार्शुक) पार्श्विक (पार्श्विक)
मर्शनम (मर्शनम्) अर्शमान (अर्शमान) अर्शस (अर्शस)
मर्शस (मर्शस), अर्शिन (अर्शिन्) अर्श (अर्श) कर्शन (कर्शन)
कार्शनव (कार्शनव), अधिकार्श्यम (अधिकार्श्यम्)
विकर्श (विकर्श), दर्श (दर्श) दर्शन (दर्शन) दर्शनीय-
(दर्शनीय) दर्शक (दर्शक) दर्शयितृ (दर्शयितृ)

(ङ) "शारद लिपि में अग्र-हलन्त /र/ के पक्ष में-
(शारदा लिपि में अग्र हलन्त /र्/ के पक्ष में

यदि /ध/ ध्वनि उपस्थित हो, तो एक नवीन ध्वनि चिह्न ः का आकार उभर कर

आता है किन्तु उच्चारण यथास्थित होकर बना रहता है।)

विश्लेधित उच्चारण > अर्थ (अर्थ) > अऊ (अर्थ)

> व्यर्थ (व्यर्थ > ब्यऊ (व्यर्थ)

T भाषा बोध के लिये अभ्यास की प्रक्रिया :—
(सामान्य बोध के लिये अभ्यास की प्रक्रिया)

अऊ (अर्थ), समऊ (समर्थ), असमऊ (असमर्थ), सुऊ (स्वार्थ), — परमाऊ (परमार्थ), अर्थिना (अर्थिन्) पाऊ (पार्थ) अर्थ- (अर्थ्य) साऊ (सार्थ) तीऊ (तीर्थ) चतुऊ (चतुर्थ) संज्ञाऊ - (संज्ञार्थ), प्रचाराऊ (प्रचारार्थ), सिद्धाऊ (सिद्धार्थ) आर्थिक (आर्थिक), अर्थवाद (अर्थवाद) अर्थदूषण (अर्थदूषण) अर्थना (अर्थना) अर्थशास्त्र (अर्थशास्त्र) तीर्थंकर (तीर्थंकर) प्रार्थना (प्रार्थना) प्रकर्षाऊ (उत्कर्षार्थ) अर्थालंकार (अर्थालंकार) पार्थव (पार्थव) पार्थिव (पार्थिव) पार्थिवी (पार्थिवी) सार्थवाह (सार्थवाह)

"च

शारदा लिपि में अग्र-हलन्त /भ्/ के पक्ष में यदि /ष/ ध्वनि उप-
(शारदा लिपि में अग्र-हलन्त /स्/ के पक्ष में यदि /ष/ ध्वनि उच्च-

स्थित हो, तो एक नवीन आकार का ध्वनि चिह्न उभर कर आता है, किन्तु
स्थित हो, तो एक नवीन आकार का ध्वनि चिह्न उभर कर आता है, किन्तु

उच्चारण यथास्थित होकर बना रहता है।"
उच्चारण यथास्थित होकर बना रहता है।)

विश्लेषित उदाहरण :-
(विश्लेषित उदाहरण)

भ/षविर (स्थविर) > भुविर (स्थविर)

भ/षाली (स्थाली) > भुली (स्थाली)

उदाहरण :
(उदाहरण)

भुग (स्थगु), भुग (स्थग), भुथति (स्थपति), भुल (स्थल)

भिर (स्थिर), भुवर (स्थावर), भुण्ड (स्थाणु) भुनभ (स्थानम्)

मुञ्च (स्थान), मुञ्चक (स्थापक) मुञ्चना (स्थापना)

मिुडि (स्थिति), मुञ्चडु: (स्थापयः), मुल्ल (स्थूल) ——

मुंगिउ (स्थंगित), मुञ्चहँरव (स्थानभैरव), मुल्ल (स्थल)

मुविर (स्थविर) मुल्ली (स्थली), मिुचउ (स्थिरता)

मुँदम (स्थैर्यम्) अमुमु (अनस्था), मिंकमु (सिंहस्था)

कण्ण! मिुचे ठव (कर्ण! स्थिरो भव) अंउमु (अंतस्थ)

कण्ठमु (कण्ठस्थ) मिुउपुरू (स्थितप्रज्ञ), मु (स्थ)

उपस्थ (उपस्थ) उपस्थ (उपस्थ) उपस्थित (उपस्थित) उपस्थ
उपस्थु) उपस्थान (उपस्थान) उपस्थातृ (उपस्थातृ)

"शारदा लिपि की प्रकृति में जब भी
/स्थ/ द्वित्व ध्वनि के पहले में /त्थ/ (त्+थ) द्वित्व ध्वनि सामने
आती है तो /स्थ/ (त्+थ) द्वित्व ध्वनि का आकार एक भिन्न-
ध्वनि रूप में बदलता है।)

विश्लेषित उदाहरण: अस्थ (थः > अस्थः,
अहेत्थः > अहित्थः,

भाभाइ सेव केलिये अनुभव की प्रक्रिया :
(सामान्य बोध के लिए अभ्यास की प्रक्रिया)

अस्सत्थः (अश्वत्थः), अस्सत्थक (अश्वत्थक) अस्सत्थमन (अश्वत्थमन्), अस्सत्थिक (अश्वत्थिक) अस्सत्थिल (अश्वत्थिल) अस्सत्था (अश्वत्था) अस्सत्थ (अश्वत्थ), अस्सत्थवृक्ष (अश्वत्थवृक्ष)

(छ)

"सारदा-लिपि की प्रकृति में सात ही /क, ग, म/ —
शारदा लिपि की प्रकृति में जब भी /क, ग, म,

ध्वनियों के वर्त्स में /न्थ/ द्वित्व ध्वनि का आगमन होता है, तो निश्चय-
ध्वनियों के वर्त्स में /न्थ/ द्वित्व ध्वनि का आगमन होता है, तो निश्चय-

ही /न्थ/ द्वित्व ध्वनि के आकार में एक स्थायी बदलाव —
ही /न्थ/ द्वित्व ध्वनि के आकार में एक स्थायी बदलाव —

आजाता है ।
आजाता है ।

विश्लेषित उदाहरण (विश्लेषित उदाहरण)

① 'क' ध्वनि की पश्च समीपता में > 'कन्थ' > /कऊ/
'क' ध्वनि की पश्च समीपता में > कन्थ > /कथा/

② 'ग' ध्वनि की पश्च समीपता में > ग्रन्थ > /गऊ/
'ग' ध्वनि की पश्च समीपता में > ग्रन्थ > /ग्रन्थ/

③ 'म' ध्वनि की पश्च समीपता में > मन्थर > /मऊर/
म ध्वनि की पश्च समीपता में > मन्थर > /मन्थर/

/क/ ध्वनि :-

① कऊ (कथा) सुकऊ (सुकथा) मलिनकऊ (मलिनकथा)

/ग/ ध्वनि :-

② गऊ (ग्रन्थ) गऊनम (ग्रन्थनम्), गऊि (ग्रन्थि) गऊिक: -

(ग्रन्थिक:) गऊिउ: (ग्रन्थित:) गऊिन् (ग्रन्थिन्) गऊिमउ (ग्रन्थिमत्)

गऊिल (ग्रन्थिल), गऊीकम (ग्रन्थीकम्), धमगऊ (धर्मग्रन्थ)

(म) पुनि

(3) मऊर (मथर), मऊिर (मथिन) मऊ: (मथ:) मऊन (मथन)

मऊरा (मथरा) मऊन (मथान) मऊरा (मथज) मऊक-

(मथक) अुअ मऊन (आत्ममथन) मऊमैल (मथमैल)

(ज) ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि के उपरान्त -

(ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि के उपरान्त

शारदा लिपि का भी च प्राचीन स्थान रहा है। उत्तरोत्तरकाल-

खण्डों में संशोधन-संस्कार के अभाव के कारण इस लिपि

में अस्पष्टता के कुछेक तथ्य इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करते

ऊ रिभ अभधूउ का उल्लाप धूमुउ करना धूमुउ धूयाभमें
है। जिस अस्वस्थता का उल्लेख प्रस्तुत करना, प्रस्तुत प्रयास में,

अनिवाद बनउ ऊः
अनिवार्य बनता है)

(अ) /ऊ/ (द्र) (द+र, द+य, ध+ट)

गोयेंऊ (गोदेन्द्र), ऊधर (वुपद), ऊम (वुम), हऊ (भद्र) ऊय (व्रय), ऊै (द्वै), मऊ (श्वद्र) ऊव्व (व्रव्य), मंहऊ (सौभद्र) मुवेऊ (सुरेन्द्र) मृगेऊ (मृगेन्द्र) कुलेऊ (कुलेन्द्र) भऊ (मद्र)

(आ) / ऽ / (ज्ञ)

भभऽ (भद्रज्ञ), वृद्धि (बुद्धि) सुद्धि (शुद्धि) वृद्धि (वृद्धि)
संसिद्धौ (संसिद्धौ) योऽ (योज्ञा) योऽउवृभा (योज्ञतव्यम्)

𑆱𑆳 (श्रद्धा) 𑆯𑆳𑆨𑆸𑆦 (वर्द्धनम्), 𑆑𑆨𑆯𑆳: (कुकवृद्धः) 𑆦𑆳𑆑𑆨𑆸𑆫: (सिद्धकृकवः) 𑆦𑆳𑆑𑆦𑆸𑆑𑆦𑆸𑆦𑆳 (सिद्धार्थसिद्धि)

(ऽ) /ष्ठ/ (ष्ट) :-

𑆫𑆨𑆦𑆳 (विशिष्ट), 𑆱𑆳𑆦𑆳 (सृष्टि), 𑆫𑆳𑆦𑆳 (दृष्टि), 𑆑𑆳𑆦𑆳 (कृष्टि), 𑆯𑆳𑆦𑆳 (वृष्टि), 𑆯𑆳𑆦𑆳 (हृष्टि) 𑆧𑆳𑆦𑆳 (तुष्टि) 𑆧𑆳 (पृष्ठ)

𑆥𑆨𑆦𑆳 (घनिष्ठा) 𑆑𑆨𑆦𑆳 (कनिष्ठा) 𑆭𑆳 (भ्रष्ट) 𑆫𑆳 (कष्ट)

𑆯𑆳 (हृष्ट) 𑆧𑆳 (तुष्ट) 𑆦𑆳 (मुष्ट)।

(ऋ) शारदा लिपि-लेखन में कुछेक जटिल शब्द-योजना, वाक्यखण्ड
(शारदा लिपि-लेखन में कुछेक जटिल शब्द-योजना, वाक्यखण्ड

एवं वाक्यों का एक विमर्शात्मक परिचय :

(एवं वाक्यों का एक विशुद्ध परिचय)

/अ/ अभरिट्ठसूउ (अस्तदित्युच्यउ), अऊ (अर्थ) अणस्सेप्पु (अधश्शेष्वं)

अव्वयभ (अव्ययम्) अस्सऊभ (अश्वित्थं) अज्झाऊभ (अध्यात्म)

अइऊिउेंस्भि (अत्यर्थिक्लेऽस्मि), अभाघाउ: (असंख्यात:)

/आ/ आदिट्ठवज्झानं (आदित्यवज्ज्ञानं), आचाद्ध (आर्चाय) —

आद्धभ (आद्यम्), पाचामद्ध (पाराशर्य) गाचार (गाधार)

संखा (संख्या) सूर (शूर), वाक्कभ (वाक्यम्)

/ई/ ईंद्र (इन्द्र) ईंप्पु (इष्ट) ईंक (इह) अग्गि (अग्नि) मग्गि

(मणि) वग्गिऊभ (रक्षितम्) निद्वन्द्व (निर्द्वन्द्व) सग्गि (स्मृति)

/ईं/ - ईंश्वर (ईश्वर) ईंशान (ईशान) ईंप्सित (ईप्सित) ईंति (ईति)

इयी (त्रयी) स्थिरधीः (स्थिरधीः) श्रीराम (श्रीराम)

/ऊ/ ऊकार (ओंकार), गुडाकेश (गुडाकेश) लीला (लीला)

चक्षु (चक्षु) अनुग्रह (अनुग्रह) सुरेन्द्र (सुरेन्द्र)

/ऊं/ ऊर्वायु (ऊर्वायु) भूमि (भूमि) शून्याकारं (शून्याकारं)

अर्ध (अर्ध) भूत (भूत) शूद्र (शूद्र) सूक्ष्म (सूक्ष्म)

/ए/ एष (एष) केकर (केकर) केशर (केशर) नेत्र (नेत्र)

भवेद्रस्वाद (भवेद्रस्वाद), सुकुपेम्म (सुकुपेम्म)

/ऍ/ ऍक्क (ऐक्य) ऍन्द्र (ऐन्द्र) ऍस्वर्य (ऐश्वर्य) कॅम्मय —

हौॅग्गः (भोगैः) कम्मिन्द्रियैः (कर्मेन्द्रियैः) दॅव्वउ (दैवत)

/ऊ/ ऊध्य (ओघ) ऊम (ओम्) ऊष्ठ (ओष्ठ) ऊउपूॅउ (ओतप्रोत)

हौॅग्गः (भोगैः) मैॅक्ख (मोक्ष), यैॅग्गी (योगी) पूॅउली (प्रतोली)

/ऊॅ/ ऊॅत्सुक्क (औत्सुक्य) ऊॅदास्सु (औदास्य) गोॅउम (गौतम)

कौॅस्तुभ (कौस्तुभ) कौॅमार (कौमार) कौॅमदी (कौमदी)

वाक्य-पदु :

(क) मणिकुंडलिनैव। (ख) सूत्रानुसारं (ग) अनुभमभूविउ।

(ध) कैटं पूर्वे मंकव मकव।(ट) सिवमु पकूनः मतु (ड)
(स) चिवमु पश्चधे टंसे।(क) उमाऊकंउ इग्गतु वूभा (उ)
(ल) चहुतु वाला आगडा। म टंवेन मक गकं गतः।
(ट) पूण्डन(मपू नसिया मुन्ले उड्डास। (०) पवभाऊनः
मकिभान्ने पसू। (ठ) नरी थधेन नगरं गछु (म्)—
नउवृद्धा वड्डिभान। (ल्ल) यडुलभुक्के ठवउः (उ) —
विसिडुयभुभक्का।(ध) कादंकभंकवैडि यः मभवूभीस (ट)
जुयुपानभकंवदूं पेड्डनाभभिकाभथक(।(ट) कालोभ्भि लोक-
क्षयकृ डुक्के।(न) सिवि मदभकभूभू ठवेदूग पयुजिउ। यदि कः
मद्यमीमा मूदुभभुभू मकक्षनः।